भूमिका Introduction

" हिन्दी नाट्य लेखिकाएँ एवं उनका कृतित्व"

साहित्य से मेरा लगाव बहुत पुराना है । घर का माहौल साहित्यिक था । विशेष कर नाटक में मेरी रुचि बचपन से थी । पिताजी "प्रतीक" नामक नाट्य संस्था के निदेशक थे । जिस कारण घर में नाटकों की चर्चा होती रहती थी । नाटक के रंग मंच पर आनें के पहले के सारे किया–कलापों को भी देखनें का अवसर मिलता था । रंगमंच पर भी कई नाटक देखनें को मिले । नाटकों के प्रति यह अतिरिक्त लगाव ही आकर्षण का कारण बना ।

पूजनीय गुरु जी 'डॉ. प्रताप नारायण झा' नें इस रुचि को ध्यान में रखते हुये हमें यह विषय –

"हिन्दी नाट्य लेखिकाएँ एवं उनका कृतित्व"

दिया । स्वतंत्रता के बाद नारी जागरण काल एक सर्वदेशीय अभियान के रुप में जाग्रत हुआ जिसके तहत नारी वर्ग नें चर्तुदिक विभिन्न विषयों में अपनीं सार्थक अस्मिता को प्रस्थापित किया । जहां एक ओर व्यावहारिक जीवन में नारियों नें क्रान्तिकारिणी के रुप में अपनीं सशक्त भूमिका का निर्वाह किया , समाज सेविकाओं के रुप में अपना सार्थक सहयोग दिया । धार्मिक उपदेष्टाओं के रुप में भी अपनीं आध्यात्मिक जागृति का परिचय दिया वहीं दूसरी ओर साहित्य –सृजन की भूमिका में भी नारियों का प्रदान एक अहम् स्थान रखता है। कविता,कहानी,उपन्यास ,नाटक ,एकांकी, संस्मरण आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं में नारियों का सार्थक प्रदेय हमारा ध्यान आकर्षित करता रहा है ।

स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी में 'महिला साहित्यकारों के लेखन की जो क्षीणधरा प्रारम्भ हुई,वही स्वातांत्र्योत्तर युग में साहित्य की अनेक विधाओं के अन्तर्गत विकसित होते हुए अपने महत्वपूर्ण योगदान को इंगित कर रही है। स्वातंत्र्योत्तर महिला लेखिकाओं के हस्ताक्षर हैं– अमृता प्रीतम, शिवानी,मन्नू भंडारी उषा प्रियम्बदा, शान्ति मेहरोत्रा, कुसुम कुमार आदि। इन लेखिकाओं का साहित्य में अभूतपूर्व योगदान रहा है, जिसे नकारा नहीं जा सकता । आज की बदलती हुयी विभिन्न परिस्थितियों एवं जीवन मूल्यों के कटुतम सत्यों से नारी वर्ग विशेष रुप से प्रभावित रहा है। अब नारी जगत स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होकर अपने विकास के पथ को निष्कंटकित एवं प्रशस्त करता हुआ अपने अस्तित्व के सर्वांगीण विकास के नये–नये आयामों को स्पर्श करता हुआ परिलक्षित हो रहा है। आज की नारी कल की नारी का भॉति अबला नहीं है। वह अपने विकास में बाधक एवं अवरोधक शक्तियों से लोहा लेने की दिशा में अपनी अदम्य

शक्ति ,साहस ,कर्तव्यपरायणता ,समझदारी,निर्भयता एवं प्रगतिशील दृष्टिकोणों का परिचय दे रही है।

नाट्य साहित्य के संदर्भ में मंचीय प्रस्तुतियों का विषय हो अथवा नाट्य लेखन की रचनाधर्मिता का दोनों ही सन्दर्भों में नारी प्रभिृति साहित्यकार ,नारी रचनाकारों का प्रदान चर्चा का विषय रहा है । नाट्य लेखन के संदर्भ में नारियों नें जो अभिनव प्रस्तुतियां की हैं ,उनके प्रति मेरा ध्यान श्रद्धावश ही नहीं गया , किन्तु रचनाओं की प्रगल्भता और उनकी सार्थकताओं के प्रति भी मै इन नारी नाट्य –सृजेताओं के प्रति आकर्षित हुई हूँ ।

हिन्दी साहित्य में नाटकों पर प्रचुर मात्रा में काम हो चुका है । नाटक पर किये जानें वाले शोध–प्रबन्धों के विषय–उद्‌भव एवं विकास नये काव्य नाटक, गीतिनाट्य ,स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक, नारी की भूमिकायें , नारी पात्र ,नारी चित्रण ,परंपरा एवं प्रयोग ,पारिवारिक सम्बन्ध ,दाम्पत्य सम्बन्ध, बदलते परिवारिक सम्बन्ध ,स्त्री–पुरुष संबंधों का अनुशीलन, नायिका की परिकल्पना, प्रेम का स्वरुप ,नारी मनोविज्ञान ,व्यक्ति चेतना ,परवर्ती चेतना ,विरोध की परंपरा, समकालीन नाटक, रंगमंचीय अध्ययन, राष्ट्रीय भावना ,संवेदना, रंगशिल्प , शिल्पगत प्रयोग, संवाद योंजना ,सांस्कृतिक योजना ,सामाजिक चेतना, साम्यवाद ,गांधीवाद ,व्यंग्य नाटक ,तुलनात्मक ग्रंथ , पशुप्रतीक, युगबोध, ऐतिहासिक नाटक , पैराणिक नाटक ,समस्या नाटक ,यौन यर्थाथ संघर्षतत्व रंगमंच का विकास आदि रहे हैं । पर नारी लेखिकाओं की रचनाओं पर व्यवस्थित रुप से मूल्यांकन करनें का कोई भी प्रयास मेरी दृष्टि में नहीं आया । छुट–पुट काम नारी लेखिकाओं के नाटको पर भी हुए हैं जैसे मन्नूभंडारी के' बिना दीवारों के घर' ,मृदुला गर्ग का ,'एक और अजनबी' शान्ति मेहरोत्रा का 'ठहरा हुआ पानीं' और 'एक और दिन'। नारी लेखिकाओं के इन नाटकों के अध्ययन के बिना कोई भी शोध–यात्रा पूरी नहीं हो सकती क्योंकि नाट्य साहित्य में ये नाटक 'मील के पत्थर' का स्थान रखते है । नारी नाट्य लेखिकाओं नें विपुल मात्रा में नाटक लिखकर हिन्दी नाट्य साहित्य को अपनें वैविध्यपूर्ण प्रदान से समृद्ध किया है । समय के साथ ही साथ उन्होने भारतीय जीवन के विविध रुपों को अनेक दृष्टियों तथा आकर्षक शिल्प के साथ प्रस्तुत किया है जिनपर अभी तक विद्वानों नें सम्यक दृष्टिपात नहीं किया । इनके महत्वपूर्ण योगदान का सही मूल्यांकन होना चाहिये । अध्ययन की इसी अपेक्षा को ध्यान में रखकर ––

'' हिन्दी नाट्य लेखिकाएँ एवं उनका कृतित्व ''

विषय को मैनें अपना शोध विषय बनाया ।

नारी लेखिकाओं नें आज के युग में अनेक रूप से होनें वाली नारी विषयक विडम्बनाओं ,समस्याओं को एक नारी होनें के कारण स्वयं आत्मसात किया हैं, भोगा है। "खग जाने खगही की भाषा " के न्याय से इन नारी लेखिकाओं नें भोगे हुए जीवन को ईमानदार और प्रामाणिक कथ्यानुभूतियों के साथ अपने नाटकों में यथार्थ रुप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । अतः उनके लेखन में आत्मसात किए हूए सत्यों का तथ्यांकन अपने यथार्थ रुप में प्रस्फुटित हो सका है। उनके यथार्थ लेखन में परिवार समाज ,संस्कृतियों ,अनेकानेक समस्याओं के पृष्ठभूमि में भारतीय नारी जीवन के बहुरंगी चित्र उपलब्ध होते है। " हाथ कंगन को आरसी क्या " इनका लिखा हुआ नाट्य साहित्य आज के नारी जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज है । इसलिये इनका प्रदेय हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण निधि है जिसको किसी भी प्रकार उपेक्षित नहीं किया जा सकता ।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध "हिन्दी नाट्य लेखिकाएं एवं उनका कृतित्व " इसी दिशा में सर्वथा नया प्रयास है क्योंकि इतने महत्वपूर्ण विषय पर अभी तक समग्र रूप से विचार नहीं किया गया है । इसके अध्ययन से नारी लेखिकाओं द्वारा प्रतिपादित एवं निरूपित नवीनतम् उपलब्धियों को विवेचित एवं विश्लेषित करने का एक लघु प्रयास किया गया है । प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में नाट्य महिला लेखिकाओं के योगदान को शोध एवं सर्वेक्षण मूल्याकंन और विश्लेषण के विभिन्न आयामों के स्तर पर परीक्षित एवं समिक्षित करने का पहला प्रयास किया गया है । इसके अध्ययन के द्वारा हिन्दी नाट्य लेखिकाओं के महत्वपूर्ण प्रदेय के आलोक में हिन्दी नाट्य साहित्य की नई और अनछुई दिशाएँ उजागर हो सकेंगी।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध के माध्यम से प्रथम बार नारी नाट्यकारों की सार्थक भूमिका का मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है । इसी संदर्भ में हिन्दी नाट्य लेखन से जुड़े अनेक विवादों की चर्चा करते हुए नारी नाट्य लेखिकाओं की सही भूमिका को भी स्थापित किया गया है तथा उनके सृजन का सन्तुलित मूल्यांकन करने का यथाशक्य प्रयास किया गया है ।

प्रायः महिला नाट्यकारों पर समीक्षकों का ध्यान कम हीगया है, इस शोध–प्रबन्ध के माध्यम से नारी नाट्यकारों के विशिष्ट प्रदान को प्रथम बार ही विश्लेषित किया गया है तथा उनकी अहम भूमिका को विभिन्न अयामों के द्वारा स्पष्ट करेन का प्रयत्न किया गया है । अतः इस क्षेत्र में नाट्य क्षेत्र की दृष्टि से उनके योगदान, मूल्य एवं महत्व की सही दिशाओं का अन्वेषण करना ही प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध का महत् उद्देश्य है । प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध नारी नाट्यकारों की विशिष्ट प्रतिभा और उनके अभिनव प्रदान को व्याख्यायित करता है । इन

महिला नाटककारों ने अपने जीवन जगत् से सम्बन्धित, राजनैतिक,सामाजिक,प्रशासनिक, धार्मिक, साहित्यिक, शैक्षणिक, आर्थिक, नैतिक विषमताओं पर करारी चोट की है । नारी नाट्य लेखिकाओं के नाट्यसाहित्य विषयक विषयक नये क्षितिज और आयाम जो उद्घाटित हुये हैं उन्हें छः अध्यायों के अन्तर्गत विभाजित किया गया है ।———

प्रथम अध्याय के अंतर्गत नारी चेतना का विकास दर्शाया गया है । नारी लेखिकाओं का हिन्दी साहित्य में अभाव था, इसके कारणों पर प्रकाश डाला गया है । इसके पीछे सामाजिक ,पारिवारिक ,राजनैतिक कारण क्या थे ? नारी लेखिकाओं का पदार्पण साहित्य में कैसे हुआ ? गद्य की सभी विधाओं के साथ ही साथ नारी लेखिकाओं का पदार्पण नाट्य साहित्य में भी हुआ। इन सभी कारणों को स्पष्ट करने का यत्न किया गया है ।

द्वितीय अध्याय में महिला लेखिकाओं की समस्त कृतियों का उल्लेख किया गया है । इन महिला नाट्य लेखिकाओं की कृतियों का वर्गीकरण किया गया है । यह वर्गीकरण दो प्रकार से किया गया है ।

1—प्रकाशन वर्ष के अनुसार (समयानुसार)

2—नाट्य रुपों के आधार पर (विषयानुसार)

1—प्रकाशन वर्ष के अनुसार सभी नाटकों को लेखिकाओं के नाम के साथ प्रकाशन वर्ष सहित क्रमशः रखा गया है।

2—नाट्य रुपों के आधार पर इन महिला लेखिकाओं ने जो विविधरंगी नाटक लिखे हैं यथा ऐतिहासिक नाटक, प्रतीक नाटक, एब्सर्ड नाटक, गीति नाट्य, एकांकी आदि उनका संक्षिप्त विवरण दिया गया है । क्योंकि नाटक की परिभाषा या विविध रूपों पर अनेक शोध—प्रबन्ध लिखे जा चुके हैं । नाट्य रूपों के अनुसार इनके नाटक किस श्रेणी में आते है ? इन नाटको के कथानक को स्पष्ट करने की चेष्टा की गई है । ऐतिहासिक नाटको में जहाँ देश की गरिमा को प्रतिस्थापित करने का प्रयास किया है , वहीं प्रतीक के माध्यम से नारी मन के मनोवैज्ञानिक पक्ष को उद्घाटित करने में ये लेखिकाएँ सफल है । आज शिल्प के धरातल पर नित नवीन प्रयोग हो रहे हैं , उस क्षेत्र में शीला भाटिया का "दर्द आयेगा दबे पॉव" भी उल्लेखनीय है । डॉ, कुसुम कुमार का "रावण—लीला" नौटंकी शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है । इन लेखिकाओं ने हास्य और व्यंग्य को भी अपनी लेखनी से अछूता नहीं रखा है । बिमला रैना,विमला लूथरा,

स्वरूप कुमारी बख्शी ने अपने नाटको को हास्य का पुट देकर उत्कृष्ट बनाया है, वहीं डॉ, कुसुम कुमार का नाटक "संस्कार को नमस्कार" व्यंग्य व "रावण–लीला " हास्य का विशिष्टतम् प्रयोग है (उदाहरण है) ।

तृतीय अध्याय के अर्न्तगत नाट्य शिल्प की चर्चा की गयी है । कथ्य की दृष्टि से विभिन्न नाटकों का परिचय दिया गया है । इनका क्या रुप होना चाहिये ?

चतुर्थ अध्याय में नाटक के चरित्र पक्ष पर प्रकाश डाला गया है । संस्कृत नाटकों से आयी नाट्य परंपरा में नायक की परिकल्पना आज की परिकल्पना से सर्वथा भिन्न है । इस लम्बी यात्रा में इन नारी लेखिकाओं ने अपने नाटकों का चरित्र– चित्रण अपने नाटकों की अवस्थाओं के अनुसार किया है तथा पात्रों का चरित्र चित्रण कैसा है इसी पर प्रकाश डालनें की कोशिश की गई है।

पंचम् अध्याय के अंतर्गत आज के नाटकों में भाषा का क्या स्थान है ,संवादों की भाषा कैसी होनी चाहिये ? पात्रनुकूल और प्रसंगानुकूल भाषा किसे कहते हैं, और आलोच्य नाट्य लेखिकाओं के नाटकों में इनका कैसा निर्वाह हुआ है , इस पर विचार किया गया है ।

षष्ठम् अध्याय के अंतर्गत आलोच्य नाटकों की अभिनेयता को दर्शाया गया है। नाटक का रंगमंच मंचसज्जा के साथ –साथ आलोच्य नाटक अभिनेय हैं या नहीं । इनका मंचन कितना सफल हो सकता है । मंचन में आने वाली कठिनाइयों को स्पष्ट किया गया है ।

इन महिला लेखिकाओं ने हिन्दी की दूसरी विधाओं की रचनाओं का नाट्यान्तर करके हिन्दी नाट्य साहित्य को अभिवृद्ध किया है । इसमे डॉ, गिरीश रस्तोगी, डॉ, मृणाल पान्डेय, डॉ, कुसुम कुमार का नाम उल्लेखनीय है – प्रतिभा अग्रवाल, सान्त्वना निगम, सरोजिनी वर्मा, जया भारती ने हिन्दी इतर भाषाओं की रचनाओं को हिन्दी नाट्य साहित्य के लिए अनूदित करके सराहनीय कार्य किया है । इनको हमने शोध की सीमाओं के कारण परिशिष्ट के अंतर्गत रखा है ।

इस अध्ययन के द्वारा मन्नू भण्डारी, मृणाल पाण्डेय, शान्ति मेहरोत्रा, कुसुम कुमार, त्रिपुरारी शर्मा, डॉ, सरोज बिसारियॉं, डॉ, गिरीश रस्तोगी जैसे कुछ सशक्त एवं प्रभावशाली हस्ताक्षरों को प्रथम बार समग्र रूप से उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है । अन्वेषण एवं शोधपरक दृष्टि जहॉं एक ओर मन्नू भण्डारी, मृणाल पाण्डेय, कुसुम कुमार, मृदुला गर्ग, शान्ति मेहरोत्रा, गिरीश रस्तोगी, त्रिपुरारी शर्मा जैसे महिला 'जंक्शन' पर पड़ी है, वहीं दूसरी ओर

सावित्रि रांका, ममता कालिया, मृदुला बिहारी जैसे अल्प ख्याति प्राप्त लेखिकाओं के योगदान को भी अपना आलोच्य विषय बना सकी हैं ।

रंगमंच और अभिनय की दृष्टियों से इन महिला लेखिकाओं का योगदान अवश्य उल्लेखनीय सीमांकन को सूचित करता है, इसमे दो मत नहीं हो सकते । उनके लेखन में जहाँ एक ओर नारी जगत विषयक मजबूरियाँ, परिस्थितियाँ हैं, तो दूसरी ओर पुरूष वर्ग की बेईमानी, दोमुँहापन तथा कथनी और करनी में अन्तर दिखाने वाली उन समग्र परिस्थितियों के प्रति विरोध, आक्रोश, विद्रोह एवं अस्वीकृति का स्वर भी मुखरित हुआ है।

अपनी इस शोध–यात्रा के दौरान मुझे जिन–जिन विद्वानों का सहयोग एवं अनुग्रह प्राप्त हुआ है, उनके प्रति मै श्रद्धानत हूँ । जिन संस्थानों ,प्रतिष्ठानों ,ग्रंथकारों तथा विद्वानों का प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से सहयोग प्राप्त हुआ है , मैं उन सभी के प्रति अपना विनीत आभार प्रकट करती हूँ ।

इस शोध प्रबंध के निर्देशक पूज्य गुरुवर डॉ. प्रताप नारायण झा ''रीडर,हिन्दी विभाग ,महाराजा सयाजी राव विश्वविद्यालय '' के प्रति अपना आत्मीय आभार प्रदर्शित करती हूँ, जिनके कुशल निर्देशन, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से यह कार्य सम्पन्न हुआ । उनके आत्मीय अनुग्रह के प्रति मै श्रद्धानत हूँ । डॉ. कुसुम कुमार प्रसिद्ध नाट्य लेखिका, डॉ. सरोज बिसारिया भूतपूर्व प्रिंसिपल वसन्त महिला कालेज वाराणसी, डॉ.गिरीश रस्तोगी, प्रसिद्ध रंगकर्मी ,नाट्य निर्देशिका तथा नाट्य लेखिका , प्रोफेसर गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के प्रति भी अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ , जिन्होने पत्रों के माध्यम से मुझे अपना सहयोग प्रदान किया ।

इसके साथ ही गुरुवर डॉ. विष्णु विराट चर्तुवेदी, डॉ. भगवान दास कहार और डॉ, अक्षय कुमार गोस्वामी के प्रति भी अपनी श्रद्धा व्यक्त करती हूँ जिन्होनें इस महत्वपूर्ण विषय पर कार्य करनें के लिये अपना समुचित सुझाव एवं आशीर्वाद दिया । हिन्दी विभाग के सभी सदस्यों के प्रति मै आभारी हूँ ,क्योंकि इन गुरुजनों नें मुझे हमेशा प्रोत्साहन और स्नेह प्रदान किया है ।

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के 'श्रीमती हंसा मेहता पुस्तकालय' के सभी सदस्यों के प्रति मै अपना आभार प्रकट करती हूँ ।

मैं अपने पिताजी डॉ, मंगला प्रसाद सिंह (रीडर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर) के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, जिनकी प्रेरणा व प्रोत्साहन से यह कार्य पूर्ण हो सका।

अपने ससुर जी श्री शिवमुर्ति सिंह के प्रति भी अपना आभार व्यक्त करती हूँ, जिनका आशीर्वाद व स्नेह मुझे हमेशा मिलता रहा है ।

मेरे पति श्री जयप्रकाश सिंह जी की प्रेरणा के कारण ही इस शोध–प्रबन्ध का श्री गणेश हुआ तथा उनके निरन्तर प्रोत्साहन व सकिय सहयोग से ही यह कार्य पूर्ण हो सका । उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर मैं मात्र औपचारिकता का निर्वाह नहीं करना चाहती । मेरे बच्चे सौम्या और विकास ने मुझे छोटे होने पर भी सदैव प्रोत्साहित किया । मेरे अनुज उत्पल ने भी मुझे यथा सम्भव सहायता की । अपने छोटो के प्रति मैं अपना स्नेह प्रकट करती हूँ ।

अन्त में मैं अपने भातृवर श्री जय शंकर पाण्डेय, को स्मरण करना अपना पुनीत कर्तव्य समझती हूँ क्योंकि उनके प्रोत्साहन और सहयोग के बिना मेंरा यह शोध–कार्य पूर्ण ही नहीं हो सकता । उन्हें मै धन्यवाद तो नहीं दे सकती क्योंकि उनसे अनुग्रह प्राप्त करना मेंरा अधिकार है ।

–::निवेदिका::–
S. Singh. 17.9.97.
सरोजिनी सिंह